श्रेष्ठगीत 8:6–7

[6] “मुझे अपने हृदय पर मुहर के समान रख, अपनी भुजा पर मुहर के समान; क्योंकि प्रेम मृत्यु के समान बलवान है, और जलन अधोलोक के समान कठोर। उसकी ज्वाला अग्नि की ज्वाला है, हाँ, यहोवा की ज्वाला है।
[7] बड़ी-से-बड़ी जलधाराएँ भी प्रेम को नहीं बुझा सकतीं, न नदियाँ उसे डुबा सकती हैं; यदि कोई मनुष्य प्रेम के बदले अपने घर की सारी सम्पत्ति भी दे दे, तो वह बिल्कुल तुच्छ ठहरेगा।”

यह संदेश उस दूल्हे के बारे में है जो अपनी दुल्हन के साथ गहरे और निजी संबंध में प्रवेश करना चाहता है। इसलिए वह उससे पहले यह निवेदन करता है कि वह उसे “मुहर” के रूप में अपने भीतर स्थान दे।

मुहर किसी वस्तु पर उसके वैध स्वामित्व का चिन्ह होती है।

इसी प्रकार यह दूल्हा चाहता है कि दुल्हन उसके मुहर को—
अपने हृदय पर (भीतर) और
अपनी भुजा पर (बाहर)—
दोनों स्थानों पर स्वीकार करे।

अर्थात अंतरमन का प्रेम और बाहरी आचरण में दिखने वाला प्रेम, भीतर से भी उसकी और बाहर से भी उसकी।

इसके बाद वह उस प्रेम की महानता को समझाता है—
वह कहता है कि “प्रेम मृत्यु के समान बलवान है”—
अर्थात जैसे मृत्यु का वर्चस्व कोई टाल नहीं सकता,
वैसे ही सच्चा प्रेम जब किसी को पकड़ लेता है,
तो कोई उसे रोक नहीं सकता। वह अपने प्रिय की रक्षा करता है।

फिर वह कहता है कि “उसकी जलन अधोलोक के समान कठोर है”— अर्थात सच्चा प्रेम बुराई को सहन नहीं कर सकता।
जब प्रेम अपवित्र किया जाता है, तो उसका प्रभाव भीतर आग की तरह जलता है।
यही वही जलन थी जिसने प्रभु यीशु को मजबूर किया कि जब उन्होंने पिता के घर को डाकुओं की गुहा बना हुआ देखा, तब उन्होंने रस्सियों का कोड़ा बनाकर सभी दुष्ट कार्यों को नष्ट किया। प्रेम का पवित्र क्रोध बुराई को नष्ट करता है, भले ही व्यक्ति पर नहीं, परंतु दुष्टता पर।

फिर लिखा है:
“बड़ी-से-बड़ी जलधाराएँ भी प्रेम को नहीं बुझा सकतीं… यदि कोई सम्पत्ति के बदले प्रेम को खरीदना चाहे, तो वह तुच्छ ठहरेगा।”

अर्थात कोई भी धन, घूस या लालच सच्चे प्रेम को बुझा नहीं सकता।

यह आत्मिक रूप से क्या प्रकट करता है?

यह मसीह के प्रेम की शक्ति को दिखाता है—
जब हम उसे सही रूप से ग्रहण करते हैं,
तो हम उसमें सदा के लिए सुरक्षित हो जाते हैं।

परंतु पहला कदम यह है कि मसीह अपनी मुहर हमारे हृदय पर और हमारे कर्मों पर रखना चाहता है।
और वह मुहर है— पवित्र आत्मा (इफिसियों 4:30)।
वह चाहता है कि पवित्र आत्मा का प्रभाव हमारे अंदर भी दिखे और हमारे जीवन के कार्यों में भी।

अर्थात भीतरी और बाहरी पवित्रता।

कुछ लोग सिर्फ हृदय से यीशु को स्वीकार करते हैं,
पर बाहरी जीवन में कोई परिवर्तन नहीं लाते।
वे मुख से तो स्वीकार करते हैं,
पर अपने कार्यों से उसे नकारते हैं।

तीतुस 1:16
“वे दावा करते हैं कि वे परमेश्वर को जानते हैं, परंतु अपने

कामों से उसका इन्कार करते हैं…”

ऐसे में सच्चा प्रेम अब तक प्रकट नहीं हुआ।

पर जब हम सचमुच से मसीह को ग्रहण करते हैं,
तो उसका प्रेम हमें इस प्रकार पकड़ लेता है कि— चाहे कोई तूफ़ान आए,
चाहे संसार हमें छोड़ दे,
चाहे हमें सारी दुनिया का धन क्यों न दिया जाए—
हमारा प्रेम मसीह से नहीं टूटता।
क्योंकि यह वह है जिसने हमें अपनी मुहर से—
आत्मा में और शरीर में—बंध लिया है।

प्रभु यीशु ने कहा—

रोमियों 8:35–39
“कौन हमें मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या सताव, या अकाल, या नग्नता, या संकट, या तलवार?”

प्रभु आपको आशीष दे।

□□□□ □□ □□ □□□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□?

□□□ □□□, □□ □□ □□□ □□ □□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□ □□□□
□□□□□□ □□□□□
□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□ □□□

□□ □□□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□ □□□□□

□□□ □□ □□□□□□□□ □□□□□□□□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□□□ □□□□
□□□□□ □□□,
□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□□□—
>>
https://chat.whatsapp.com/L3ysoFZcz058XCX9oLvKL1?s=cl&p=a&mlu=4&ilr=4

□□□□□□□:

+255693036618 □□ +255789001312

□□□□□ □□□□ □□□□ □□□

Share on:
WhatsApp